Golden Jubilee Year - Gayatri Teerth, Shantikunj

Overlooking the sacred city of Haridwar and nestled in the serene Himalayas on the bank of the holy Ganges, Shanti Kunj Ashram celebrates its 50th anniversary in June 2021 as a centre of pilgrimage, spiritual awakening and social upliftment. A holy place of global importance, it fosters peace and goodwill among people of all backgrounds, beliefs and identities. It is the home to the Global *Gayatri Pariwar,* a mass spiritual movement, with more than one hundred million followers.

Gayatri Teerth, Shanti Kunj was established in 1971 by Pandit Shriram Sharma Acharya, as a living model of a futuristic society, unity and equality. It is a modern adoption of the age old wisdom of Vedic Rishis, who practiced and propagated the philosophy of *Vasudhaiva Kutumbakam*. The divine intentions of Pandit Shriram Sharma Acharya for the Ashram were given shape and converted into reality by his spiritual consort and collaborator, Vandaniya Mata Bhagvati Devi Sharma.

Pandit Shriram Sharma Acharya, born on September 20, 1911 in Anwalkheda village, Agra District, Uttar Pradesh, India, devoted his life for the emergence of a new era of universal peace, harmony and goodwill. When he was only fifteen years of age, he endeavoured 24 Mahapurushcharans of Gayatri Maha-mantra, took part in the non-violent struggle for India's independence as a volunteer, went to jail a number of times during freedom struggle and embarked upon the task of social and moral upliftment through spiritual means with the blessings of Mahatma Gandhi. He translated the entire Vedic Vangmaya in lucid Hindi with eloquent comprehensive introductions and accomplished a feat of writing more than 2400 enlightening books in Hindi on all aspects of life. He lived a simple, disciplined life full of devout austerity, visited the Himalayas several times and attained spiritual eminence and foresight. When Pandit Shriram Sharma, Acharya took Samadhi on June 02, 1990, Gayatri Jayanti day, Mataji took over all the responsibilities of the mission and managed with great courage.

Gayatri Teerth, Shanti Kunj welcomes seekers of all faiths and backgrounds. Spread across several acres, its campus constitutes a network of shrines, temples, eateries, lecture theatres, libraries, yoga and meditation halls, recording studios, farms, medical clinics, ayurvedic surgeries and simple residential quarters. At any given point of time, the campus accommodates approximately three thousand *sadhaks* and their families. The Ashram and *Gayatri Pariwar* are wholly sustained through the voluntary contribution of one rupee, one handful of grain and one hour a day of voluntary work from each of its many millions of adherents.

Gayatri Teerth, Shanti Kunj, Haridwar is the embodiment of silent revolution that Pandit Shriram Sharma Acharya launched for social and spiritual transformation through continuous work on seven major areas of outreach: Inner Transformation, Village Autonomy, Reform of Religious Understanding and Practice, Promotion of Health and Well being, Environmental Protection, Empowerment and Education of Women and Disaster Management.

India Post is delighted to issue Commemorative Postage Stamp to celebrate the Golden Jubilee (1971 to 2021) of Gayatri Teerth, Shanti Kunj, Haridwar, contributing to the social and spiritual upliftment of millions in India and abroad.

Credits:

Stamp/ FDC/ Brochure/

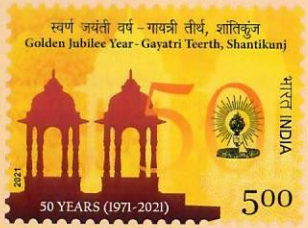
Cancellation cachet: Ms. Nenu Gupta

Text: Referenced from content provided by the proponent

भारतीय डाक
India Post

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS

स्वर्ण जयंती वर्ष - गायत्री तीर्थ, शांतिकुंज
Golden Jubilee Year - Gayatri Teerth, Shantikunj



विवरणिका BROCHURE

स्वर्ण जयंती वर्ष - गायत्री तीर्थ, शांतिकुंज

निर्मल हिमालय की गोद में, पावन नगरी हरिद्वार के निकट महान पवित्र गंगा नदी के तट पर बसा शांतिकुंज आश्रम, जो कि तीर्थस्थल होने के साथ–साथ आध्यात्मिक ज्ञान एवं सामाजिक उत्थान का केंद्र है, जून, 2021 में अपनी स्थापना की 50वीं वर्षगांठ मना रहा है। वैश्विक महत्व का यह पवित्र स्थल, विविध पृष्ठ भूमियों, आस्थाओं तथा विभिन्न पहचान वाले लोगों में शांति और सद्भाव को प्रेरित करता है। शांतिकुंज, वैश्विक स्तर के जन आध्यात्मिक आंदोलन गायत्री परिवार का प्रमुख केंद्र भी है, जिसके 10 करोड़ से अधिक अनुयायी हैं।

गायत्री तीर्थ, शांतिकुंज की स्थापना 1971 में पंडित श्रीराम आचार्य द्वारा की गई थी। इसकी स्थापना का उद्देश्य एकता एवं समानता का संदेश देते हुए भविष्य के समाज का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करना था। इस आश्रम में वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत का प्रचार–प्रसार करने वाले वैदिक ऋषियों के सदियों पुराने ज्ञान का आधुनिक रूप देखने को मिलता है। इस आश्रम की स्थापना को लेकर पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के पुनीत लक्ष्य को उनकी आध्यात्मिक संगिनी एवं सहयोगी, वंदनीय माता भगवती देवी शर्मा के द्वारा मूर्त रूप प्रदान किया गया।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का जन्म 20 सितंबर, 1911 को उत्तर प्रदेश, भारत के आगरा जिले के गांव अनवलखेड़ा में हुआ। पंडित जी ने अपना संपूर्ण जीवन विश्व में शांति, एकता एवं सद्भावना के एक नए युग की शुरूआत में अर्पित कर दिया। मात्र 15 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने गायत्री महामंत्र के 24 महापुरुषाचरणों का निर्वहन किया तथा साथ ही, भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान स्वयंसेवी के रूप में अहिंसा आंदोलन में भाग लिया। स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान वे अनेक बार जेल भी गए। महात्मा गांधी के आशीर्वाद से वे आध्यात्म को साधन बना कर लोगों के सामाजिक एवं नैतिक उत्थान के अपने लक्ष्य को साधने के मार्ग पर अग्रसर हुए। उन्होंने सुबोध और स्पष्ट विस्तृत प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए संपूर्ण वैदिक वाङ्मय का सरल हिंदी में अनुवाद किया। उन्हें, जीवन के विविध पहलुओं पर, हिंदी भाषा में 2400 से अधिक मार्गदर्शी पुस्तकें लिखने का श्रेय प्राप्त है। पंडित जी ने सादा, अनुशासित एवं तापसी जीवन व्यतीत किया। उन्होंने अनेक बार हिमालय की यात्रा की और उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान एवं दिव्यदृष्टि की प्राप्ति हुई। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने 2 जून, 1990 को गायत्री जयंती के दिन समाधि ले ली। उनके बाद माता जी ने मिशन की सभी जिम्मेदारियां अपने कंधों पर ले ली और उनका भली–भांति निर्वहन किया।

गायत्री तीर्थ, शांतिकुंज सभी धार्मिक आस्थाओं तथा पृष्ठभूमि के श्रद्धालुओं का स्वागत करता है। कई एकड़ में फैले इसके परिसर के अंतर्गत कई पवित्र स्थल, मंदिर, भोजनालय, व्याख्यान कक्ष, पुस्तकालय, योग एवं ध्यान केंद्र, रिकॉर्डिंग स्टूडियो, खेत, चिकित्सा केंद्र, आयुर्वेदिक शल्य चिकित्सा केंद्र और पूरी सादगी से निर्मित आवासीय स्थल मौजूद हैं। इस परिसर में किसी भी समय लगभग 300 साधकों और उनके परिजन निवास करते हैं। गायत्री आश्रम तथा गायत्री परिवार पूर्णतया अपने करोड़ों अनुयायियों की ओर से प्राप्त होने वाले स्वैच्छिक योगदान पर निर्भर है, जिसके अंतर्गत प्रत्येक अनुयायी एक रुपया, एक मुट्ठी अनाज और एक घंटे की स्वयं सेवा का योगदान करता है।

शांतिकुंज हरिद्वार का गायत्री तीर्थ उस शांतिपूर्ण क्रांति की प्रतिमूर्ति है, जिसका सूत्रपात पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने जनसामान्य के सामाजिक तथा आध्यात्मिक उत्थान के लिए किया और इस दिशा में उन्होंने 7 प्रमुख क्षेत्रों अर्थात् मनुष्य का आंतरिक परिवर्तन, ग्राम स्तरीय स्वावलंबन, धार्मिक ज्ञान तथा आचरण के क्षेत्र में सुधार, स्वास्थ्य तथा समग्र कल्याण को प्रोत्साहन, पर्यावरण संरक्षण, महिलाओं को अधिकार प्रदान करना एवं उनकी शिक्षा तथा आपदा प्रबंधन पर मुख्य रूप से ध्यान केंद्रित किया।

भारतीय डाक, भारत तथा विदेश में करोड़ों लोगों के सामाजिक तथा आध्यात्मिक उत्थान की दिशा में गायत्री तीर्थ, शांतिकुंज हरिद्वार के योगदान को रेखांकित करते हुए इसकी स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण /
विवरणिका / विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता
पाठ : प्रस्तावक द्वारा प्रदान की गई सामग्री से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: :	500 पैसे 500 p
मुद्रित डाक–टिकटें Stamps Printed	: :	402525 402525
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक–टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00